इकाई 13 डायरी (मोहन राकेश की डायरी)

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य
13.1 प्रस्तावना
13.2 डायरी : एक साहित्यिक विधा
13.3 डायरी और अन्य विधाएँ
13.4 मोहन राकेश की डायरी का पठन
13.5 डायरी का सार
13.6 डायरी की प्रमुख विशेषताएँ
13.7 भाषा-शैली
13.8 सारांश
13.9 शब्दावली
13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम-2 के तीसरे खंड की इस इकाई में मोहन राकेश की डायरी का अंश प्रस्तुत किया जा रहा है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- डायरी नामक साहित्यिक विधा की विशेषताएँ बता सकेंगे,
- डायरी और संस्मरण, डायरी और यात्रा वृतांत तथा डायरी और आत्मकथा का अंतर बता सकेंगे, और
- मोहन राकेश की डायरी की विषय-वस्तु एवं भाषा-शैली की विशेषताएं बता सकेंगे,

13.1 प्रस्तावना

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम-2 (एफ.एच.डी.-2) के तीसरे खंड का संबंध साहित्य की विभिन्न गद्य विधाओं से है। आपने एफ.एच.डी.-1 के तीसरे खंड में भी साहित्य की विविध विधाओं का अध्ययन किया होगा। इस खंड में हम कुछ और विधाओं का अध्ययन करने जा रहे हैं। इस खंड की पहली इकाई और पाठ्यक्रम की तेरहवीं इकाई में आप डायरी नामक विधा का अध्ययन करेंगे। इसके लिए पाठ्यक्रम की विशेषज्ञ समिति ने मोहन राकेश की डायरी का चयन किया है। इकाई में आप पाठ के लिए निर्धारित अंशों को भी पढ़ेंगे।

डायरी लिखना कई लोगों की आदत होती है। समाज को तरह-तरह से प्रभावित करने वाले लोग जब डायरी लिखते हैं तो उनको पढ़ने से हमें नयी दृष्टि मिलती है। मोहन राकेश 'नयी कहानी' दौर के प्रमुख कथाकार हैं। आपने कहानियाँ, उपन्यास और नाटक लिखे हैं। 'आषाढ़ का एक दिन' और 'आधे अधूरे' नाटक साहित्यिक और रंगमंचीय दोनों दृष्टियों से कालजयी कृतियाँ मानी जाती हैं। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास की गणना भी हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासों में की जाती है। मोहन राकेश द्वारा लिखी गई डायरी उनकी असामयिक मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई थी। इस डायरी को पढ़ने से मोहन राकेश के व्यक्तित्व के कई अनजाने पहलू उजागर हुए। एक लेखक और एक व्यक्ति के रूप में उनका आत्मसंघर्ष का चित्र पाठकों के सामने उपस्थित हुआ। वैसे तो यह पूरी डायरी ही पठनीय है लेकिन यहाँ हम उसमें से बहुत छोटा अंश पाठ के रूप में शामिल कर रहे हैं।

इस इकाई में हम आपको डायरी विधा के बारे में बताएँगे। उसके महत्व और उसकी विशेषताओं का उल्लेख करेंगे ताकि आप यह समझ सकें कि डायरी एक साहित्यिक विधा कैसे है। इकाई में डायरी की तुलना हम संस्मरण, आत्मकथा और यात्रा वृतांत से भी करेंगे। ये विधाएँ डायरी के काफी निकट हैं

क्योंकि इन सभी में व्यक्ति अपने अनुभवों के बारे में लिखता है, लेकिन इन विधाओं में अंतर भी है, जिन्हें जानना भी जरूरी है।

इकाई में हमने मोहन राकेश के दिये गये अंश पर भी विचार किया है और उसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया है। साथ ही, हमने डायरी लेखन की उपयोगिता को भी रेखांकित किया है।

13.2 डायरी : एक साहित्यिक विधा

डायरी गद्य साहित्य की एक विशेष विधा है। इसमें लेखक आत्म साक्षात्कार करता है। वह अपने आपसे संप्रेषण की स्थिति में होता है। वह स्वयं ही लेखक होता है और स्वयं ही पाठक होता है। इसमें उसके नितांत निजी अनुभव प्रकट होते हैं।

आधुनिक काल में गद्य की अनेक विधाओं का जन्म और विकास हुआ है इस विधाओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है : (i) कथात्मक गद्य विधाएँ, और (ii) कथेतर गद्य विधाएँ। कहानी, उपन्यास, नाटक आदि कथात्मक गद्य विधाएँ हैं। इनके मूल में एक कथानक होता है। पूरी विधा उस कथानक के इर्द-गिर्द घूमती है। आमतौर से ये विधाएँ कल्पना से निर्मित होती हैं। लेखक अपने अनुभव संसार में रहते हुए इनकी कल्पना करता है और उसी के सहारे इन्हें लिखता है। आधुनिक काल में कुछ ऐसी गद्य-विधाएँ विकसित हुई हैं, जिनकी रचना का आधार कल्पना नहीं, वरन् वास्तविक अनुभव होते हैं। लेखक वास्तविक, तथ्यात्मक घटना का वर्णन करता है। तब भी इनमें साहित्यिक सौंदर्य अभिव्यक्त हो जाता है। डायरी, पत्र, संस्मरण, यात्रा-वृतांत, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज आदि विधाएँ कथेतर गद्य-विधाएँ कहलाती हैं। इनमें वर्णित की गई घटनाएं लेखक की कल्पना की उपज नहीं होती, वरन् उसके जीवन में सचमुच घटित हुई होती है, और तब भी उनमें साहित्यिक सौंदर्य हो सकता है।

डायरी कोई भी लिख सकता है। डायरी लिखने का मतलब है, अपने रोज़मर्रा के अनुभवों को लिपिबद्ध करना। डायरी को रोजनामचा भी कहा जाता है जिसका मतलब है, रोज यानी प्रत्येक दिन की घटनाओं का लेखा जोखा। लेकिन यह कोई अनिवार्य शर्त नहीं है कि व्यक्ति रोजाना डायरी लिखे ही। इसमें दिनों, सप्ताहों और कई बार महीनों का भी अंतराल हो सकता है। डायरी व्यक्ति प्रकाशन के लिए नहीं लिखता। यह और बात है कि बाद में डायरी का प्रकाशन हो। लेकिन डायरी एक नितांत निजी लेखन है। जब व्यक्ति डायरी लिख रहा होता है तब यही सोचकर कि यह लिखना सिर्फ उसके अपने लिए है।

यहाँ आपके मन में यह सवाल पैदा हो सकता है कि व्यक्ति स्वयं अपने लिए क्यों लिखता है? क्या डायरी का लिखना 'स्वांतः सुखाय'* लेखन है? डायरी लेखन आत्मावलोकन का एक तरीका है। डायरी में व्यक्ति महज घटनाओं और अनुभवों का वर्णन नहीं करता। वह उनके माध्यम से आत्म विश्लेषण करता है। वह उनसे अपने लिए सबक लेता है। डायरी का लेखन लेखक सिर्फ अपने लिए करता है इसलिए वह डायरी में अपने और दूसरों के बारे में ज्यादा बेबाकी और निर्ममता से लिख सकता है।

आमतौर पर डायरी लिखने वाले से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उसमें सब कुछ ईमानदारी से लिखेगा। ईमानदारी से लिखना डायरी की बुनियादी शर्त है। इसके लिए लेखक में आत्मबल का होना जरूरी है। यदि डायरी लिखते हुए भी व्यक्ति सत्य पर आवरण डालने की कोशिश करता है तो डायरी लिखने का उद्देश्य ही परास्त हो जाता है।

सत्य लिखने के साहस का यह मतलब नहीं है कि डायरी में जो कुछ लिखा जाता है वह सही होता है। सही और गलत का संबंध सत्य और असत्य से सदैव हो, यह जरूरी नहीं है। डायरी में बाते लेखक अपनी दृष्टि के अनुसार ही लिखता है और यहाँ उसकी दृष्टि अनुभवों के विश्लेषण में पूरी ईमानदारी से व्यक्त हो रही होती है इसलिए डायरी उस लेखक के दृष्टिकोण को समझने में सबसे ज्यादा मददगार हो सकती है।

डायरी लेखन में यह प्रश्न भी उपस्थित होता है कि कौन-सी बातें डायरी में लिखी जानी चाहिए और कौन-सी नहीं? वैसे तो इसका फैसला लेखक स्वयं करता है। लेकिन आमतौर पर उन घटनाओं और

अनुभवों को डायरी में लिखने के लिए लेखक चुनता है जिन्हें वह अपने लिए महत्वपूर्ण समझता है। यह कोई साधारण सा अनुभव भी हो सकता है, लेकिन उस साधारण से अनुभव में लेखक संभव है किसी गहरे सत्य का आलोक देख रहा हो। इसलिए डायरी में घटना या अनुभव महत्वपूर्ण नहीं होता। महत्वपूर्ण होती है, लेखक की अंतर्दृष्टि जिसके माध्यम से वह घटना या अनुभव डायरी में दर्ज होता है।

डायरी निजी लेखन है और वह प्रकाशन के लिए नहीं होता इसलिए उसमें शिल्प का उतना महत्व नज़र नहीं आता। लेकिन ऐसा नहीं है। एक रचनाकार के लिए तो डायरी का लेखन भी रचनात्मक चुनौती के रूप में उपस्थित होता है। कथ्य की दृष्टि से भी और शिल्प की दृष्टि से भी। डायरी के लेखन की सबसे बड़ी शक्ति यह होती है कि उसमें लेखक अपनी बात को मनचाहे ढंग से रख सकता है। लेकिन सत्य से बंधा होने के कारण उसे बंधकर भी रहना पड़ता है। वह सत्य को उजागर करने के लिए भाषा में निहित संभावनाओं का पूरा उपयोग करता है। वह अपनी बात और अपने भावों और विचारों के अनुसार भाषा और शैली को ढाल सकता है। ऐसा करते हुए उसे अपनी रचनात्मक क्षमता का अत्यंत सावधानी से उपयोग करना होता है।

अंत में, डायरी के बारे में यह भी समझना जरूरी है कि कोई भी पाठक किसी भी लेखक की डायरी को शिल्प की उत्कर्षता के लिए नहीं पढ़ता वह उसमें लेखक के उस 'रूप' को खोजना चाहता है जो अब तक उससे छुपा रहा है। लेखकीय व्यक्तित्व का यह प्रकाशन भी डायरी में भाषा के माध्यम से होता है इसलिए डायरी में भाषा के रचनात्मक उपयोग का केंद्रीय महत्व है।

13.3 डायरी और अन्य विधाएँ

कथेतर गद्य विधाओं का तुलनात्मक अध्ययन हमें डायरी को समझने में सहायता प्रदान करेगा इसलिए हम डायरी और अन्य समान विधाओं की तुलना करेंगे। डायरी, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रा-वृतांत और पत्र - इन सभी गद्य विधाओं में लेखक के वास्तविक अनुभवों और उसके जीवन की तथ्यात्मक घटनाओं का वर्णन मिलता है। इन सभी विधाओं के केंद्र में लेखक का स्वयं का जीवन होता है। इन सभी विधाओं में तथ्यात्मक सूचनाओं का संप्रेषण होता है, लेकिन यह लेखक का उद्देश्य नहीं होता। यदि उसने मात्र सूचनाओं को सम्प्रेषित करने के लिए इन विधाओं का उपयोग किया है तो इनकी व्यावहारिक उपयोगिता तो रह सकती है, परंतु साहित्यिक या कलात्मक उपयोगिता नहीं रहती। ऐसी किसी सामग्री को हम साहित्यिक रचना की श्रेणी में नहीं रखेंगे।

डायरी और आत्मकथा

डायरी आत्मकथा का ही एक रूप है। आत्मकथा में भी लेखक अपने जीवन की कहानी कहता है और डायरी के पन्नों में भी लेखक अपने बारे में ही लिखता है। जब आत्मकथा का लेखक अपने जीवन की कहानी दूसरों को सुनाना चाहता है तो उसका श्रोता या पाठक उससे अलग होता है। उसका एक उद्देश्य होता है। अच्छी आत्मकथा आत्मसाक्षात्कार* का एक रूप होती है, लेकिन वह इसके लिए आत्मकथा नहीं लिखता। उसके जीवन में कुछ ऐसा है, जिसे वह दूसरों को सुनाना चाहता है। और यही कामना उसे आत्मकथा लिखने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए हर आत्मकथा का एक अंतर्निहित उद्देश्य होता है। वह पूरी रचना उस उद्देश्य से बंधी हुई चलती है।

डायरी में ऐसा कुछ भी नहीं होता। डायरी अपने शुद्ध रूप में स्वयं को संबोधित रचना है। उसका लेखक ही उसका पाठक होता है। वह आत्मसाक्षात्कार का शुद्ध रूप है। उसे किसी अन्य को कुछ नहीं सुनाना। उसका कोई अन्य उद्देश्य नहीं होता। अपने आप से संवाद ही उसका उद्देश्य होता है। इसलिए डायरी में कई संकेत अनकहे रह जाते हैं। कई बड़े प्रकरण संकेत में सिमट कर रह जाते हैं। जबकि आत्मकथा में लेखक उस पूरे प्रकरण को विस्तार से पृष्ठभमि सहित लिखता है। आत्मकथा प्रकाशित होने के लिए ही लिखी जाती है। जबकि डायरी प्रकाशित होने के लिए नहीं लिखी जाती। इसलिए आत्मकथा में लेखक तथ्यों और घटनाओं को तोड़-मरोड़कर अपने हित में, या अपनी दृष्टि से भी प्रस्तुत कर सकता है। उसे 'आत्म औचित्य' की स्थापना करने की भी चिंता होती है। डायरी लेखक के सामने यह मजबूरी नहीं होती। उसे अपने आपसे छल करने की कोई ज़रूरत नहीं होती। वह तो वास्तविक तथ्यों का भोक्ता है। वह सत्य को जानता है। इसलिए वह अपनी तरफ से उसमें कोई असत्य तथ्य प्रकट नहीं करता। वह अपनी गलतियों और कमजोरियों को स्वीकार करता चलता है। आत्मकथा लेखक अपनी गलतियों के लिए कुछ बाह्य कारण ढूंढ़कर उन्हें मानवीय कमजोरी के रूप में प्रस्तुत करके

पाठक की सहानुभूति प्राप्त करना चाहता है। आत्मकथा लेखक अपनी पैरवी करता है, डायरी का लेखक अपने आप से जिरह करता है। वह स्वयं के विरूद्ध फैसला करता जाता है। डायरी लेखक उसी समय, या उस दिन या दिन भर की घटनाओं का लेख-जोखा डायरी में करता हैं। इसलिए डायरी की विषय वस्तु एक दिन की होती है। जबकि 'आत्मकथा' में लेखक अपने संपूर्ण जीवन का पुनरावलोकन करता है।'आत्मकथा' लिखने का निर्णय लगभग मंजिल के पास पहुंचने पर किया जाता है। जीवन के किसी निर्णायक मोड़ पर पहुंचने के बाद उसमे आत्माभिव्यक्ति की भावना का उदय होता है। जीवन के अनुभवों के बारे में लेखक की राय स्पष्ट होती है। वह जब पीछे मुड़कर अपने 'जीवन' को देखता है तो उसका सारा जीवन 'स्मृति' में आ जाता है। इसलिए आत्मकथा स्मृति पर निर्भर रचना है। स्मृति पर आधारित होने के कारण अनेक तथ्य और घटनाएं विस्मृती* में चली जाती हैं। समय के अंतराल में कुछ बातों को हम भूल जाते हैं, कुछ बातें हमें महत्वहीन लगने लगती हैं। वे सब चीजें आत्मकथा में छूट जाती है। उन सबका एक सम्मिलित प्रभाव याद रहता है। उस प्रभाव के माध्यम से लेखक उन महत्वपूर्ण क्षणों की पुनर्रचना करने की कोशिश करता है। जिस क्षण हम उन अनुभवों से गुज़र रहे होते हैं, उस क्षण हम क्या सोच रहे होते हैं यह डायरी का कथ्य है। उन क्षणों के बीत जाने के बाद नये अनुभवों के आलोक में अब हम क्या सोचते हैं? यह आत्मकथा का कथ्य है।

डायरी में तात्कालिक प्रतिक्रिया होती है। ऐसी बातें हो सकती हैं, जिन्हें आगे चलकर स्वयं लेखक ही नकार दे। डायरी के लेखन में एक निरंतरता होती है। इस निरंतरता के कारण 'डायरी' के कथ्य में अंतर्विरोध हो सकता है। डायरी लेखन के दौरान लेखक विकसित होता रहता है। उसके विचार विकसित होते हैं। वह पुराने विचारों को त्याग कर नये विचार ग्रहण करता है। यह वैचारिक यात्रा लेखक को समझने में सहायक होती है। आत्मकथा में तो लेखक अपने अंतिम निष्कर्ष देता है। वे उसके प्रतिनिधि विचार होते हैं। इसलिए डायरी में व्यक्त विचारों को हम लेखक की अंतिम, प्रामाणिक या प्रतिनिधि राय नहीं मान सकते।

डायरी और संस्मरण

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में किसी तीसरे व्यक्ति को कुछ बताना चाहता है, तब वह 'सस्मरण' लेखन की विधा को अपनाता है। डायरी में लेखक और पाठक एक ही व्यक्ति होता है। वह अपने लिए ही लिखता है, जबकि संस्मरण का कोई पाठक होता है। लेखक अपने से इतर किसी अन्य व्यक्ति को कुछ कहना चाहता है। इस स्तर पर संस्मरण आत्मकथा के करीब होता है। संस्मरण का उद्देश्य होता है। प्रायः वह सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण व्यक्ति के जीवन के बारे में कुछ नयी बातें कहना चाहता है। संस्मरण का नायक (विषय) सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण या लोकप्रिय व्यक्ति होता है। आमतौर पर अति सामान्य व्यक्ति का संस्मरण नहीं लिखा जाता। लेकिन ऐसा अनिवार्य भी नहीं है। हाँ, वह व्यक्ति ऐसा होना चाहिए, जिसे तीसरा व्यक्ति (पाठक) भी जानना चाह सकता है। पंडित जवाहरलाल नेहरु, प्रेमचंद, अल्बर्ट आइन्सटाईन, बिरजू महाराज जैसे लोगों पर अनेक संस्मरण मिल सकते हैं। पाठक इनको जानता है, वह इनके बारे में और भी बहुत कुछ जानना चाहता है। इसलिए एक सामान्य आदमी भी इनके बारे में अपने संस्मरण सुना सकता है।

संस्मरण में लेखक, संस्मरण जिस व्यक्ति के बारे में है और पाठक ये तीन बिंदु होते हैं। डायरी में लेखक ही पाठक होता है। लेखक अपने बारे में भी डायरी लिख सकता है। इस तरह यह संभव है कि डायरी का विषय भी लेखक स्वयं हो सकता है, पाठक और लेखक तो वह होता ही है।

'संस्मरण' में लेखक से इतर किसी 'व्यक्ति' (नायक) का होना आवश्यक है। सिर्फ अपने बारे में कही गयी बातें संस्मरण की श्रेणी में नहीं आती। संस्मरण का 'विषय' होना अनिवार्य है। 'संस्मरण' में भी आत्माभिव्यक्ति की संभावना होती है। लेखक अपने बारे में भी बीच-बीच में कुछ-कुछ बातें कहता जाता है। दरअसल संस्मरण का विषय दो व्यक्तियों का साझा अनुभव होता है। लेखक और विषय (नायक) जिस बिंदु पर आकर मिलते हैं - उसका वर्णन संस्मरण का 'कथ्य' होता है। लेखक अपने बारे में जो भी कहता है, उसक संबंध प्रस्तुत व्यक्ति से कुछ-न-कुछ होना चाहिए इसी तरह प्रस्तुत व्यक्ति का कुछ-न-कुछ संबंध लेखक से होना चाहिए। जिस व्यक्ति को आप नहीं जानते, उसका संस्मरण लिखने का आपको अधिकार नहीं है। इसी तरह उस व्यक्ति के बारें में आप वही बातें लिख सकते हैं, जिनको आपने स्वयं देखा और महसूस किया है। आप सुनी-सुनायी बातों को संस्मरण में नहीं लिख सकते। आप संस्मरण के द्वारा उस व्यक्ति के बारे में अपनी गवाही देते हैं। समाज में पूर्व में प्रचलित बातों को पुष्ट करते हुए भी, आप संस्मरण लिख सकते हैं, या उस व्यक्ति के बारे में आप नयी बातें भी कह सकते हैं। आपका सस्मरण ऐसा तो होना ही चाहिए, जैसा कोई और नहीं लिख सकता। आपकी डायरी

आप ही लिख सकते हैं। इसी तरह आपके संस्मरण भी आप ही लिख सकते हैं, कोई दूसरा नहीं लिख सकता। यह निजता संस्मरण और डायरी की अपनी विशेषता है।

संस्मरण में आप कोई गोपनीय रहस्य उद्‌घाटित करें, ऐसा आवश्यक नहीं है। संस्मरण प्रकाशन के लिए लिखा जाता है। इसलिए उसमें लेखक 'आत्म औचित्य' का ध्यान रख सकता है। किसी मार्मिक प्रकरण में वह अपनी भूमिका के लिए सफाई दे सकता है। इस दृष्टि से संस्मरण डायरी से दूर तथा 'आत्मकथा' के करीब पहुंच जाता है। संस्मरण भी 'आत्मकथा' की तरह स्मृति से लिखा जाता है। इसमें भी कुछ बातें छूट जाती हैं। कुछ बातों को गैर ज़रूरी मानकर लेखक छोड़ देता है। प्रासंगिक दृष्टि से मूल्यवान बातों को ही वह कहता है। इसलिए इसमें भी अतीत और वतर्मान दोनों काल उपस्थित रहते हैं। लेखक नये जीवन के आलोक में प्राचीन घटनाओं का पुनः स्मरण करता है। तभी तो वह 'स्मरण' है। इसके लिए वह 'डायरी' का सहारा ले सकता है। परंतु उसका कथ्य डायरी से अलग हट जाता है। 'डायरी' का लेखक भी अपनी डायरी में 'संस्मरण' का उपयोग कर सकता है। परंतु उसके कथ्य का उद्देश्य अलग होता है।

डायरी और यात्रा वृतांत

'यात्रा-वृतांत' में लेखक किसी स्थान विशेष का वर्णन सुनाता है। जाहिर है कि ऐसा वर्णन उन स्थानों का होता है, जहां लेखक स्वयं गया है और जिन्हें लेखक पसंद करता है। सुनी-सुनायी बातों के आधार पर यात्रा-वृतांत लिखना संभव नहीं है। यात्रा-वृतांत में उस स्थान विशेष का सम्पूर्ण विवरण देना आवश्यक नहीं है। यदि आप उस स्थान विशेष पर जायें तो किस होटल में रूके, किस स्थान से चप्पल खरीदे, कहाँ पान खाया आदि बातें यात्रा वृतांत में आए ही यह आवश्यक नहीं है।

एक अच्छे यात्रा-वृतांत में तथ्य और कल्पना का मिश्रण होना चाहिए। उदहारण के लिए किसी शहर में पुराना किला या घंटाघर बना हुआ है। यह तथ्य है। लेखक यदि यात्रा-वृतांत लिखेगा तो उसमें इसका उल्लेख होगा। यह उल्लेख पर्यटक-निर्देशिका* में भी होगा। दोनों तरह की पुस्तकों में वहाँ की चहल-पहल, आवा-जाही, दूकानदार-ग्राहकों के व्यवहार, मौसम आदि का जिक्र होगा। अब उस घंटाघर या पुराने किले को देखकर लेखक के मन में जो भावनाएं जाग्रत होंगी, या लेखक की कल्पना सक्रिय होगी - उन सबका वर्णन पर्यटक-निर्देशिका में नहीं होगा। यह कल्पनाशीलता और भावुकता यात्रा-वृतांत की अपनी विशषता है और इसी कारण 'यात्रा-वृतांत' को हम सर्जनात्मक साहित्य की श्रेणी में गिनते हैं तथा पर्यटक-निर्देशिका के लेखक को व्यावसायिक लेखक मानते हैं।

यात्रा-वृतांत को डायरी के रूप में लिखा जा सकता है और संस्मरण के रूप मे भी लिखा जा सकता है। इसको इस रूप में समझा जा सकता है। डायरी का लेखन उसी दिन होता है। उस एक दिन यदि आप किसी विशेष स्थान पर गये हैं तो, उसमें आप उसका वर्णन लिख सकते हैं। डायरी का यह हिस्सा यात्रा-वृतांत का एक रूप हो सकता है। यह भी हो सकता है कि आप अपनी यात्रा सम्पन्न करने के बाद उसका वर्णन करने बैठें। जाहिर है कि ऐसा आप स्मृति के आधार पर करेंगे। भले ही यात्रा-वृतांत डायरी की तरह उसी दिन लिखें या न लिखें परंतु उसे उसी दौरान लिख लिया जाता हो जब तक कि यात्रा का अनुभव आपको याद हो। इसलिए यात्रा के दस-पंद्रह दिनों के भीतर उसे लिख लिया जाता है। इस तरह यह सजीव स्मृति का लेखन है।

यात्रा-वृतांत का एक लक्ष्यीभूत पाठक होता है। यह पाठक डायरी के पाठक से भिन्न होता है। जहाँ रचना किसी और व्यक्ति को संबोधित होती है, वहाँ लेखक में औपचारिकता आ जाती है। आप ठीक से वाक्य बनाते हैं, पूरी बात भूमिका सहित लिखते हैं, अस्पष्टता से बचते हैं। प्रत्येक संकेत को समझाने की कोशिश करते हैं। लिखते हुए सम्प्रेषण के नियमों को ध्यान में रखते हैं। यह रचना कौशल डायरी से उसको अलग करते हैं।

यात्रा वृतांत का कोई-न-कोई उद्देश्य होता है। आमतौर पर किसी स्थान विशेष के सौंदर्य से या वहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक जिंदगी से प्रेरित होकर ही लेखक यात्रा करता है। वह चाहता है कि पाठक भी उस अनुभव का साझीदार बनें। उसकी भीतरी आकांक्षा होती है कि आप उसे स्थान विशेष पर जायें तो उस लेखक की दृष्टि से भी एक बार देखें। वह पाठक के साथ सम्प्रेषण की इस स्थिति में आना चाहता है। हिंदी में अज्ञेय और निर्मल वर्मा ने बहुत उत्कृष्ट यात्रा-वृतांत लिखे हैं। जब भी अवसर मिले आपको उनका अध्ययन करना चाहिए।

बोध प्रश्न-1

1. निम्नलिखित में से कौन-सी कथात्मक गद्य विधा नहीं है :
   क) जीवनी
   ख) उपन्यास
   ग) नाटक
   घ) कहानी ( )

2. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता डायरी पर लागू नहीं होती।
   क) अपने अनुभवों के बारे में लिखना
   ख) प्रकाशन के लिए नहीं लिखना
   ग) कल्पना के सहारे लिखना
   घ) आत्मावलोकन करना ( )

3. किसी लेखक की डायरी पढ़ने का केंद्रीय महत्व क्या है?

   .....

4. कौन-सी विधा डायरी के नजदीक नहीं है?
   क) संस्मरण
   ख) आत्मकथा
   ग) यात्रा वृतांत
   घ) निबंध ( )

13.4 मोहन राकेश की डायरी का पठन

जालंधर : 26.1.58

हवा में वासन्ती स्पर्श है - समय अच्छा-अच्छा लगता है। ऐसे में अनायास मन होता है कि हल्के-हल्के स्वर में किसी से बात करें। अपने चारों ओर घर की मिठास, घर की उष्णता हो। किसी के हाथ चाय की प्याली लाकर दें, और प्याली के साथ वह हाथ भी थाम ले। हल्का-सा खिंचाव हो और ओंठ मदिर मुस्कराहट से फैल जाएँ। परंतु यह सब कैसे हो?.....जिससे इस सबकी आशा की थी, उसने तो उस दिन रेखा खींच दी। जिससे वस्तुतः आशा की पूर्ति सम्भव है, उसके अपने बन्धन हैं, अपने दायित्व हैं, एक भरा पूरा घर है, जहाँ उसे अपना एक निश्चित रोल अदा करना होता है।

और मैं इस एकान्त से, इस वीरानगी* से समझौता करने के प्रयत्न में हूँ जिससे किसी रूप में तो जीवन की धुरी बैठ जाए।

लिखने-पढ़ने में अपने को पूरी तरह खो लिया जा सकता है, क्यों न उस aspect को मन से निकाल देने का ही प्रयत्न किया जाए? परंतु प्रयत्न मात्र से ही तो परिणाम नहीं निकल आता।

वस्तुतः जो ट्रेजेडी* हुई है, उसमें मेरा ढुलमुलपन ही तो कारण है।

शिमले में उन दिनों एक बार मनोरमा साहनी ने कहा था, 'क्यों करते हैं ब्याह? मना क्यों नहीं कर देते? जब मन नहीं है, तो क्यों व्यर्थ में.....?'

कितनी बार साहस संचित किया था कि लिख दें, नहीं, हमारी मर्जी नहीं है। मगर फिर-फिर वही बात सामने आ जाती थी....उनसे कह जो चुके हैं।

जब भी मन उखड़ने लगता है, चाह होती है वीणा को एक पत्र लिख दें। उसे बुरा लगे या अच्छा, लिख दें। सच में, उसकी आत्मीयता किस तरह छा लेती है? कैसे मानूं कि वह मेरे लिए पराई है और किसी और के लिए अपनी है।

कुत्ते भौंकते हैं, गाड़ी फक-फक करती है, रात चिलचिला बोलती है - और हम खामोश हैं। लिख रहे हैं कि किसी तरह थक जाएं, जिससे नींद आ जाए, मगर विडम्बना यह है कि कितना ही थकने की कोशिश करें, पूरा थकते नहीं। और थक जाते हैं तो नींद नहीं आती। और नींद आती है तो थकान दूर नहीं होती। ऐसे सुबह उठते हैं जैसे दस घण्टे दफ्तर में काम करके आए हों।

Must work, work, and work. Must not waste myself.

इरादा था, सोने से पहले उपन्यास के एक अध्याय का खाका बनाएंगे। अब खाक बनाएंगे?

जालंधर : 27.1.58

एक और पत्र -

वीणा,

बाद दोपहर घर से निकलते हुए लैटर बाक्स देखा। तुम्हारा पत्र निकला। सड़क पर चलते हुए पढ़ा - 'एक प्रातः यहाँ आ जाओ। सप्ताह भर रहना घूमना। बात करना। चित्त सुस्थिर हो जाएगा।'

जल्दबाजी की आदत तो है ही। आज निश्चय कर लिया कि फरवरी के पहले या दूसरे सप्ताह चला जाऊंगा, कुछ काम साथ ले जाऊंगा। घूमूंगा, पढ़ूंगा-लिखूंगा।

सारा शहर घूम लिया। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिससे जी भरकर बात की जाए। कभी भी नहीं मिलता। रोज़ इसी तरह घूमकर लौट आता हूं। हर मिलने वाले से उसका चेहरा लगाकर भेंट करता हूं।.....फिर शाम गहरी हो जाती है। घर लौटता हूं - और.....

यहीं आकर मन उलझने लगता है।

.....तो घूमते हुए प्लाज़ा में जा बैठा। तुम्हारा पत्र फिर निकाला। फिर पढ़ा — 'मां आ सकें तो.....'

पत्र बंद करके रख दिया। कार्यक्रम जितनी आसानी से बनाया था, उतनी ही आसानी से ढह गया।

तुम्हें पहले भी बता चुका हूँ शायद कि मां बस का सफर नहीं कर सकतीं। वे मील भर बस में जाती हैं तो पीली पड़ जाती हैं। एक बार शिमला से कालका तक भेज दिया था। वरुन साथ में था। उसकी रिपोर्ट थी कि न जाने किस तरह वहां तक जीवित पहुंच गयीं। इस बार डलहौज़ी ले जाना चाहता था। सोचा था कि कोई डोली मिल जाए तो ले जाऊं। पर उसके लिए मां नहीं मानी। बताओ, उन्हें कैसे लाऊं?

इसका अर्थ है कि आप भी न आऊं। यही शायद ठीक भी है। मन को इतना भटकने नहीं देना चाहिए। एक बार हो आया हूं, फिर हो आऊंगा तो क्या प्रमाण है कि मन सुस्थिर हो जाएगा? यह एक दिन की भूख तो नहीं है।

इन दिनों कागज़ों से प्यार बढ़ाने के प्रयत्न में हूं। अभी कुछ बेगार का काम कर रहा हूं। दो-तीन दिन में पूरा हो जाएगा। फिर किसी तरह ठीक से मन को जुटाऊंगा।.....अच्छा, तुम यह नहीं कर सकतीं कि रोज़ सोने से पहले मुझे एक पत्र लिख दिया करो, जैसे किसी को चाय की प्याली बनाकर देते हैं, या किसी के सिर में मालिश कर देते हैं, या पान का बीड़ा पकड़ा देते हैं। कर सको तो कठिन तो नहीं है। मैं तो खैर, कर सकता हूं ही। मेरे पास रोज़ कहने को बात नहीं होती - लेकिन केवल कुछ कहने के लिए ही तो नहीं लिखा जाता। बहुत कुछ ऐसा भी सम्प्रेषण होता है, जिसे बात के रूप में देखें तो कुछ भी नहीं होता, पर होता वह बहुत कुछ है। मैं रोज़ सोने से पहले अपने अंदर उमड़ते हुए उस 'कुछ' को सम्प्रेषित करने के लिए व्याकुल होता हूं। निःसंदेह वह 'कुछ' वह नहीं है, जिसके दोष से मैं लांछित हूं। वह 'कुछ ' 'कुछ' भी हो, शारीरिकता से छुआ नहीं होता - यद्यपि उससे कहीं बलवान होता है।

कमरे की सब खिड़कियाँ खुलवाई हैं, जिससे ठंडी हवा अंदर आए। महसूस करना चाहता हूं कि सर्दी चली गई है और निरभ्र* आकाश में मंडराती हुई हवा बही है, जो पुलक और विश्वास लेकर आती है। न जाने क्यों मौसम बदलने से पहले चाहने लगता हूं कि मौसम बदल जाए, यह बात हर अनागत क्षण को लेकर होती है। धैर्य से उसकी प्रतीक्षा मैं नहीं कर पाता।

कभी-कभी यह भी अनुभव करना चाहता हूं कि आकृति न सही, एक भावना यहीं कहीं पास में है, अभी मेरी ओर देखकर मुस्करा देगी, खिलखिला उठेगी। अभी मेरे तकिये के पीछे आ खड़ी होगी और मेरे बालों को सहला देगी। अभी मेरा टेबल लैंप बुझा देगी और कहेगी, थको नहीं, सो जाओ। लेकिन, भावना इतनी मूर्त क्योंकर हो सकती है? अपनी छलना पर स्वयं मुस्करा देता हूं। हटाओ जी, यह सब बात। पढ़े-लिखे समझदार आदमी हो, तुम्हें यह सब शोभा नहीं देता। कोई और बात सोचो, या कोई उपन्यास पढ़ो। या रेडियो लगाकर किसी अपरिचित देश का संगीत सुनो। या बत्ती बुझाकर अंधेरे में जुगनुओं की कल्पना करो। या बाहर सड़क पर घूमो। या कल से हर रोज़ दस बजे एक नींद की टिकिया खाया करो।

सोचना, एक टी.बी. की तरह का मर्ज़ है, जिसका एकमात्र इलाज है खुली हवा।

अच्छा, तो मैं दो-चार छः रोज़ में दिल्ली जाऊंगा। जितने दिन मन करेगा, वहां रहूंगा। फिर एक दिन लौट आऊंगा और मेज़ कुर्सी पर डट जाऊंगा। जिस दिन फिर मन उखड़ेगा, फिर भाग जाऊंगा।

अच्छा, पत्र लिखना - एक पंक्ति का पतंजलि सूत्र नहीं।

— राकेश

मन को स्थिर करने की कोई प्रक्रिया सोचो पण्डित। इस तरह उलझे-बिखरे रहोगे तो जिन्दगी यूं ही पूरी कर दोगे। आखिर तुम्हीं अकेले तो नहीं हो जिस पर यह सूनापन छाया है। और तुम्हें तो भाई, जिंदगी में बहुत-कुछ मिला भी है, मिलता भी है। बल्कि जितना तुम करते हो, उससे अधिक पा लेते हो। फिर क्यों मचलते हो? काम करना चाहते हो, काम करो। खामखाह का रेशम कात कर उसमें उलझ जाने का कोई अर्थ नहीं।

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय।

बोध प्रश्न-2

1. 'क्यों करते हैं ब्याह?, मना क्यों नहीं कर देते?.....' ये वाक्य किसने और कहाँ कहे?

   .....

   .....

2. लेखक ने किसे 27 जनवरी 1958 को पत्र लिखा?

   .....

3. काग़जों से प्यार बढ़ाने का क्या अर्थ है?

   .....

   .....

13.5 डायरी का सार

आपने मोहन राकेश की डायरी के इन अंशों को ध्यान से पढ़ा होगा। आइये सबसे पहले हम डायरी का सार जान लें।

यह डायरी मोहन राकेश ने जालंधर में रहते हुए 26 जनवरी, 1958 और 27 जनवरी, 1958 के दिन लिखी है। अपनी प्रसन्नचित मनःस्थिति का जिक्र करते हुए लेखक हवा के रूमानी प्रभाव का उल्लेख करता है। किसी से बात करने की मन में कामना जागती है। वह आश्वस्त, स्नेहिल और घरेलू संबंध की कामना करता है। वह चाहता है कि 'किसी के हाथ चाय की प्याली लाकर दे'। इसी सुखद कल्पना के बाद उसे पुनः निराशा घेर लेती है। उसे लगता है कि यह संभव नहीं है। जिस से उम्मीद की थी, उसने मनाकर दिया। जो कर सकता है (या कर सकती है) उसका अपना पारिवारिक दायित्व है।

लेखक अपने जीवन के इस खालीपन से परेशान है। वह चाहता है कि साहित्य की दुनिया में वह अपने अपको डूबा दे और भावनात्मक रिश्तों को मन से निकाल दे। क्या यह संभव है? इस सबके लिए वह कहीं अपने 'ढुलमुलपन' को ही दोषी मानता है। शिमला में किसी हितैषी महिला (मनोरमा साहनी) ने कहा भी था कि जब मन नहीं है तो ब्याह क्यों करते हो? मना कर दो? लेखक भी सोचता है कि वीणा को पत्र लिख ही दें।

रात के वातावरण का जिक्र करते हुए लेखक चाहने लगता है कि वह लिखते-लिखते थक जाए और सो जाए? परंतु थकते ही नहीं। थक भी गए तब भी नींद नहीं आती। नींद आ भी जाए तो थकान नहीं मिटती। सुबह ऐसा लगता है मानो 'दस घंटे दफ्तर में काम करके आए हों।'

अगले दिन 27 जनवरी, 1958 की डायरी में लेखक ने वीणा को लिखा पत्र उद्धृत किया है। वीणा के पत्र का जबाव देते हुए राकेश लिखते है कि सारे शहर में कोई जी भरकर बात करने के लिए व्यक्ति नहीं मिला। सिर्फ उसका चेहरा मिलता है। मानवीय संप्रेषण की यह कमी लेखक को खलती है। फिर-फिर वीणा का पत्र पढ़ता है। कितनी बार 'बता चुका हूँ' कि मां बस पर सफर नहीं कर सकती। मतलब यह कि मां न आए तो लेखक भी नहीं आ सकता। लेखक सोचता है कि वहाँ जाने से भी मन स्थिर हो जाएगा, क्या यह तय है?

लेखक सूचित कर रहा है कि इन दिनों वह लिखने-पढ़ने के कार्यों में लगा हुआ है। फिर वह वीणा से आग्रह करता है कि वह 'रोज सोने से पहले मुझे एक पत्र लिख दिया करे' जैसे 'किसी को चाय की प्याली बनाकर देते हैं'। काम असंभव तो नहीं है परंतु कठिन है। मोहन राकेश यहां फिर डायरी लिखने

की प्रेरणा का उल्लेख करते हुए कहते हैं 'बहुत कुछ ऐसा भी सम्प्रेषण होता है, जिसे बात के रूप में देखें तो कुछ भी नहीं होता, पर होता वह बहुत कुछ है।' लेखक सोने से पहले उमड़ने वाले उस 'कुछ' को संप्रेषित करने के लिए व्याकुल होता है। (उस 'कुछ' की अभिव्यक्ति का एक रूप यह डायरी है।)

लेखक अपने आपको अभिव्यक्त करते हुए आगे कहता है कि उसमें धैर्य नहीं है। वह प्रतीक्षा नहीं कर सकता। जो होना है वह हो जाए। मौसम बदलना है तो तुरंत बदल जाए। परंत ऐसा होता नहीं। इससे भी निराशा तो होती ही है।

अपने अकेलेपन से मुक्ति पाने के लिए लेखक कामना करता है कि उसके आस-पास 'व्यक्ति' न सही एक भावना रहे। उसके रहने का विश्वास रहे और उसे लगता रहे कि 'अभी वह मेरी ओर देखकर मुस्करा देगी।' स्नेह-संबंधों की यह आकांक्षा लेखक की कल्पना में ले जाती है और वह स्वयं ही अपनी इस छलना पर मुस्करा देता है। इससे तो अच्छा है कि किसी अपरिचित देश का संगीत सुने या उपन्यास पढ़े या घूमे-फिरे या रोज नींद की एक गोली खा ले। लेखक को लगता है कि चिंतन-सोचना-विचारना एक बीमारी है, जो अकेले में बढ़ती है। इससे मुक्ति पाने के लिए वह चार-छः रोज के लिए दिल्ली जाएगा। फिर वापिस आकर काम करेगा, इसकी सूचना वह पत्र में देता है।

पत्र समाप्त करने के उपरांत लेखक अपने-आप से संवाद की स्थिति में आता है और अपने मन को स्थिर करने के लिए अपने आपको सलाह देता है। काम करना चाहते हो तो काम करो। निरर्थक कल्पनाओं में, मीठे ख्यालों में क्यों उलझते हो।

13.6 डायरी की प्रमुख विशेषताएँ

दो दिन की इस डायरी में लेखक ने अपने अकेलेपन की पीड़ा या भावनात्मक रिक्तता (खालीपन) का वर्णन किया है। यदि इसे रचना के रूप में देखें तो हम पायेंगे कि इसमें तथ्यों का नितांत अभाव है। डायरी का उद्देश्य हम जान सकते हैं, परंतु उससे हमें कोई खास जानकारी मिलती हो - सो बात नहीं है। तथ्य नहीं है, तथ्यों के संकेत है, जिन्हें लेखक जानता है। उसे पता है। उन तथ्यों के प्रति मानसिक प्रतिक्रियाएँ लेखक ने व्यक्त की हैं। यदि उन्हें वह नहीं लिखता, तो स्वयं ही भूल जाता। इसलिए एक संकेत सूचक वाक्य लिखकर आगे बढ़ गया। उदाहरणार्थ - 'जिंससे इस सबकी आशा की थी, उसने तो उस दिन रेखा खींच दी।' इस वाक्य का सम्पूर्ण अर्थ लेखक जानता है। हम नहीं जानते। लेखक ने हमें इस वाक्य का अर्थ नहीं समझाया। क्यों? क्योंकि लेखक ने हमारे लिए अर्थात् पाठक के लिए इस डायरी को लिखा ही नहीं। उसने तो अपने लिये लिखा था और इस संकेत को वह कभी भी समझ सकता है। यह डायरी के लेखन की अपनी विशेषता है। यदि लेखक संस्मरण, यात्रावृतांत या आत्मकथा लिखता तो इस प्रकरण पर अवश्य प्रकाश डालता।

डायरी में वर्णित इन मानसिक प्रतिक्रियाओं से हमारे सामने लेखक के रूप में एक ऐसे भावुक व्यक्ति की तस्वीर उभरती है जो रिश्तों की उष्मा में जीना चाहता है, रिश्तों पर निर्भर रहना चाहता है। वह चाहता है कि 'किसी का हाथ चाय की प्याली लाकर दे' आत्मीयता की कामना और इसके अभाव की पीड़ा एक ऐसा दर्द है जिसे किसी दुनियादार आदमी को नहीं समझाया जा सकता। दूसरे, लेखक स्वयं भी जानता है कि इस दर्द का इलाज संभव नहीं। इसे सहना ही है। फिर, काम करे और थक जाये। थक जाये और सो जाये। परंतु दर्द की सीमा यहाँ तक है कि 'नींद आती है तो थकान दूर नहीं होती।' दर्द की दवा की निरर्थकता का यह एहसास ही लेखक को डायरी जैसे निजी और आत्मीय लेखन की तरफ ले जाता है।

दो दिनों की इस डायरी में निरंतरता है। जो दर्द पहले दिन की डायरी में है, वही दूसरे दिन भी मौजूद है। इस दिन वीणा को पत्र लिखा गया है। इस पत्र में भी वही आत्म साक्षात्कार है। अपना ही उतावलापन, अस्थिरता, दिवास्वप्न और आकांक्षा है। लेखक एक ऐसी भावना को अपने आस-पास देखना चाहता है जो 'मेरे तकिये के पीछे आ खड़ी होगी और मेरे बालों को सहला देगी'। जाहिर है कि यह दिवास्वप्न दैनिक जीवन में अनेक कष्टों को न्यौता देगी। ये पीड़ायें डायरी के इन अंशों में मौजूद है। आत्मसाक्षात्कार के रूप में लिखी गयी इस डायरी में किसी प्रकार की भूमिका नहीं है। लेखक किसी अन्य को संबोधित नहीं करता। इसलिए इसमें औपचारिक लेखन की दृष्टि से अनेक कमियां दिखायी देगी। लेकिन उस एक दिन लेखक क्या महसूस करता रहा इसकी तस्वीर उस दिन डायरी में

पूरी तरह से उपलब्ध है। और यही इस डायरी की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस रूप में यह किसी भी डायरी की उपलब्धि हो सकती है।

डायरी आत्मसाक्षात्कार की विधा है। इसमें व्यक्ति अपने आप से संवाद करता है। मोहन राकेश की इस डायरी के अंश में दो दिन की लेखक की मनःस्थिति का चित्रण है। इस मनःस्थिति का विशेष संदर्भ है। इस संदर्भ का खुलासा डायरी में नहीं है लेकिन उसके प्रभाव का चित्र अत्यंत प्रभावशाली रूप में डायरी में अंकित हुआ है।

> 'जब भी मन उखड़ने लगता है, चाह होती है वीणा को एक पत्र लिख दें। उसे बुरा लगे या अच्छा, लिख दें। सच में, उसकी आत्मीयता किस तरह छा लेती है? कैसे मानूँ कि वह मेरे लिए पराई है और किसी और के लिए अपनी है।'

मोहन राकेश ने अपने मन की उलझन को भी डायरी में दर्ज किया है। मन में अगर बेचैनी है तो काम में अपने को लगाए रखने से भी बात नहीं बनती। काम में न्मा नहीं लगता और शरीर पर भी उसका अनुकूल असर नहीं पड़ता।

> ' लिख रहे हैं कि किसी तरह थक जाएँ, जिससे नींद आ जाए, मगर विडंबना यह है कि कितना ही थकने की कोशिश करें, पूरा थकते नहीं। और थक जाते हैं तो नींद नहीं आती। और नींद आती है तो थकान दूर नहीं होती। ऐसे सुबह उठते हैं जैसे दस घंटे दफ्तर में काम करके आए हों।'

13.7 भाषा-शैली

वैसे तो डायरी कई उद्देश्यों से प्रेरित होकर लिखी जा सकती है। उसमें रोज का हिसाब-किताब दर्ज किया जा सकता है। हर रोज डायरी लेखक के जीवन में घटने वाली घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है, लेकिन ऐसी डायरी को साहित्यिक विधा नहीं माना जा सकता। वही डायरी साहित्य रचना का दर्जा पा सकती है जिसमें डायरी लेखक की रचनात्मक ऊर्जा की अभिव्यक्ति हो। वहाँ घटनाओं और भावों का वर्णन पर्याप्त नहीं है। इस दृष्टि से देखने पर हम पाते हैं कि मोहन राकेश की डायरी में घटनाओं और भावों का वर्णन नहीं है।
26 जनवरी के दिन लिखी गई डायरी का आरंभ लेखक इस तरह करता है :

> 'हवा में वासंती स्पर्श है, समय अच्छा-अच्छा लगता है। ऐसे में अनायास मन होता है कि हल्के-हल्के स्वर में किसी से बात करें।'

इन दो वाक्यों में लेखक ने डायरी लिखने के क्षणों का वर्णन किया है, लेकिन यह वर्णन इस तरह से भी हो सकता था: 'वसंत की हवा चल रही है जो बहुत अच्छी लग रही है। किसी से बात करने का मन कर रहा है।' बात कहने के इस ढंग की तुलना यदि मोहन राकेश के कथन से करें तो हमें उनके कथन की उत्कर्षता का एहसास आसानी से हो जाएगा। इन पहले दो वाक्यों में ही लेखक की मनःस्थिति का आभास हो जाता है।'समय अच्छा-अच्छा लगता है' में सिर्फ बाह्य स्थिति का वर्णन नहीं है वरन् लेखक की आंतरिक अनुभूति का संकेत भी है।'हवा में वासंती स्पर्श है' कहने से ही कथन में निहित सर्जनात्मक स्पर्श का संकेत मिल जाता है।

डायरी का लेखन प्रकाशन के लिए नहीं होता। लेकिन साहित्यिक डायरी में लेखक की भाषा का उत्कर्ष रूप देखने को मिलता है। इस डायरी-अंश में भी हम पाते हैं कि लेखक शब्दों का प्रयोग अत्यंत सजग होकर करता है। उसकी भाषा में भावात्मक तरलता का आभास हमें बराबर मिलता है। जनवरी की ठंडी हवा का असर जो मन पर पड़ता है, उसके अनुरूप भाषा लिखी गई है। लेखक की भाषा में आत्मीय शीतलता का सहज आवेग हर कहीं है :

> 'कितनी बार साहस संचित किया था कि लिख दें, नहीं, हमारी मर्जी नहीं है। मगर फिर-फिर वही बात सामने आ जाती थी..... उनसे कह जो चुके हैं।'

या इन वाक्यों में अपने-आप से बात करने के अंदाज को देखें :

> 'इरादा था, सोने से पहले उपन्यास के एक अध्याय का खाका बनायेंगे। अब खाक बनायेंगे?'

दूसरे दिन की डायरी में लेखक ने वीणा को लिखे पत्र को उद्धृत किया है। वीणा को पत्र लिखने की बात का जिक्र 26 जनवरी के अंश में है : 'जब भी मन उखड़ने लगता है, चाह होती है वीणा को एक पत्र लिख दें।' लेखक अपने इस इरादे को पूरा करता है और वीणा को पत्र लिखता है। न तो पत्र से और न ही डायरी के अंश से यह ज्ञात होता है कि लेखक का वीणा के साथ क्या संबंध है। लेकिन पत्र और अन्य उल्लेख इस बात का आभास दे देते हैं कि वीणा लेखक की आत्मीय है। यही वजह है कि पत्र का संबोधन अत्यंत अनौपचारिक ढंग से होता है : 'वीणा ,'। आगे-पीछे किसी अन्य संबोधन का न होना यह बताने के लिए पर्याप्त है कि वीणा-लेखक के बीच गहरा आत्मीय रिश्ता है। यह आत्मीयता पूरे पत्र में बराबर अभिव्यक्त हुई है। यही वजह है कि पत्र में लेखक अपने हृदय की बात कहने में संकोच नहीं करता।

> "कभी-कभी यह भी अनुभव करना चाहता हूँ कि आकृति न सही, एक भावना यहीं कहीं पास में है, अभी मेरी ओर देखकर मुस्करा देगी, खिलखिला उठेगी। अभी मेरे तकिये के पीछे आ खड़ी होगी और मेरे बालों को सहला देंगी।"

इन वाक्यों में लेखक का हृदय ही नहीं उसका रचनाकार मन भी हमारे सामने आता है। भावना को अपने आसपास एक सजीव आत्मीय की तरह महसूस करने को लेखक ने गतिशील बिंब में बांध दिया है। यहाँ कवि की प्रिया ही भावना के रूप में साकार हो उठी है कि लेखक स्वयं अपने से प्रश्न करने लगता है :

> .... अभी मेरा टेबल लैंप बुझा देगी और कहेगी, थको नहीं, सो जाओ। लेकिन, भावना इतनी मूर्त क्योंकर हो सकती है? अपनी छलना पर स्वयं मुस्करा देता हूँ। हटाओ जी, यह सब बात। पढ़े-लिखे समझदार आदमी हो, तुम्हें यह सब शोभा नहीं देता।"

पत्र का यह अंश पढ़ने से हमें सहज ही यह आभास हो जाता है कि मोहन राकेश अपने मन की स्थिति का चित्रण करने में किसी तरह का संकोच नहीं कर रहे हैं। लेकिन यह सब कहते हुए, लेखक का अपनापन भी हमें महसूस होता है।

बड़े लेखक की यह पहचान होती है कि वह साधारण सी बात कहते हुए उसमें असाधारण मंतव्य, असाधारण ढंग से डाल देता है।

> "मेरे पास रोज़ कहने को बात नहीं होती - लेकिन केवल कुछ कहने के लिए ही तो नहीं लिखा जाता, पर होता वह बहुत कुछ है। मैं रोज़ सोने से पहले अपने अंदर उमड़ते हुए उस 'कुछ' को संप्रेषित करने के लिए व्याकुल होता हूँ। निस्संदेह वह 'कुछ' वह नहीं है, जिसके दोष से मैं लांछित हूँ। वह 'कुछ' कुछ भी हो शारीरिकता से छुआ नहीं होता - यद्यपि उससे कहीं बलवान होता है।"

डायरी के इन दोनों अंशों को पढ़ने से हमें लेखक की भाषिक शक्ति का प्रमाण मिलता है। अपने मन की उलझनों को इतने खूबसूरत ढंग से कह सकना मोहन राकेश की भाषा की विशेषता रही है। भाषा के इस सौंदर्य को हम उनकी कहानियों और नाटकों में भी देख सकते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि लेखक के लिए डायरी लिखना भी रचनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति है।

बोध प्रश्न-3

1. "वस्तुतः जो ट्रेजेडी हुई है, उसमें मेरा ढुलमुलपन ही तो कारण है।' डायरी के इस कथन में लेखक के व्यक्तित्व की किस विशेषता का पता लगता है?

   .....

2. 'वीणा' को लिखे गये पत्र के अंत में लेखक ने "अच्छा, पत्र लिखना - एक पंक्ति का पतंजलि सूत्र नहीं।" लिखने में लेखक की किस भावना का पता लगता है?

   .....

3. मोहन राकेश की डायरी के पठित अंश की कोई दो भाषागत विशेषताओं का उल्लेख करें।

   .....

   .....

अभ्यास

1. डायरी और आत्मकथा या डायरी और संस्मरण का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
2. मोहन राकेश के पठित डायरी अंश की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. उक्त अंश की भाषा-शैली संबंधी विशेषताएँ भी बताइए।

13.8 सारांश

- आपने इस इकाई में मोहन राकेश द्वारा लिखित डायरी के अंशों का वाचन किया और उसकी विशेषताओं की जानकारी प्राप्त की। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साहित्यिक डायरी की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।
- इकाई में आपने एक साहित्यिक विधा के रूप में डायरी की विशेषताओं का परिचय प्राप्त किया है। डायरी एक निजी विधा है। डायरी में लेखक अपने जीवन के अनुभवों और विचारों को दर्ज करता है, लेकिन किसी दूसरे के लिए नहीं अपने लिए। डायरी के माध्यम से वह अपने आप से साक्षात्कार करता है।
- डायरी संस्मरण, आत्मकथा और यात्रावृतांत विधाओं के काफी नज़दीक है। आत्मकथा में लेखक अपने जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है जबकि डायरी में सिर्फ उन दिनों का ही विवरण होता है, जिस दिन लेखक डायरी लिखता है। संस्मरण में लेखक अपने से संबंधित किसी अन्य व्यक्ति के साथ जुड़ी स्मृतियों को प्रस्तुत करता है जबकि डायरी में अतीत की स्मृतियाँ नहीं वर्तमान का सत्य प्रस्तुत होता है। यात्रावृतांत लेखक द्वारा की गई यात्रा का वर्णन होता है। यात्रावृतांत संस्मरण और डायरी दोनों रूपों में लिखा जा सकता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इन विधाओं के पारस्परिक संबंध को समझ गए होंगे।
- डायरी के जिन अंशों का आपने अध्ययन किया है उसकी विषयवस्तु और भाषा-शैली की विशेषताओं पर भी इकाई में विचार किया गया है। अपने मन की उलझनों को, अपने आत्मीय जनों के साथ संबंधों को इस डायरी में लेखक ने दर्ज किया है जिसमें उसके मन की विभिन्न स्थितियों का परिचय मिलता है। डायरी में लेखक की भाषा का सौंदर्य और शैली की विशिष्टता का भी हमें परिचय मिलता है।

उपर्युक्त इकाई के अध्ययन से आप डायरी विधा की विशेषताएँ बता सकेंगे।

13.9 शब्दावली

स्वांतः सुखाय	:	अपने सुख के लिए
आत्म-औचित्य	:	अपने उचित होने को साबित करना
आत्मसाक्षात्कार	:	अपने आप को पहचानना
विस्मृति	:	भूलना
पर्यटक-निर्देशिका	:	जिसमें पर्यटन संबंधी जानकारी दी गई हो। आमतौर पर पर्यटन से संबंधित संस्थाएँ इसका प्रकाशन करती हैं।
वीरानगी	:	शून्य एकांत
ट्रेजेडी	:	त्रासदी
निरभ्र	:	बादलों से रहित
पतंजलि-सूत्र	:	पतंजलि ऋषि द्वारा लिखे सूत्र। ये अपनी संक्षिप्तता के कारण पहचाने जाते हैं।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय	:	गीता के एक श्लोक का अंश। कृष्ण अर्जुन को कहते हैं : हे अर्जुन, उठ खड़े हो।

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. क
2. ग
3. लेखक के निजी अनुभवों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को जानने के लिए।
4. घ

बोध प्रश्न-2

1. शिमला में, लेखक से मनोरमा साहनी ने।
2. वीणा को।
3. लेखन कार्य में प्रवृत्त होना।

बोध प्रश्न-3

1. आत्मस्वीकार का साहस
2. वह वीणा से लंबे उत्तर की आशा करता है।
3. आत्मीयता और भावात्मक तरलता से युक्त भाषा

अभ्यासों के उत्तर इकाई पढ़कर स्वयं लिखिए।